सर्वे के अटपट बोल

हर साल बजट से ठीक पहले जारी होने वाला राष्ट्रीय आर्थिक सर्वेक्षण इस बार जनवरी में आधा ही जारी हो सका था तो इसकी दो वजहें थीं। घोषित वजह यह कि बजट महीनाभर पहले आ गया था, तब तक सर्वे तैयार करने के लिए जरूरी आंकड़े उपलब्ध नहीं थे और अघोषित कारण यह कि नोटबंदी से मची हलचलों ने वित्त मंत्रालय को अर्थव्यवस्था के बारे में कोई ठोस बात कहने लायक ही नहीं छोड़ा था। नतीजा यह हुआ कि इकनॉमिक सर्वे के नाम पर तब कुछ अमूर्त बातें ही कही जा सकी थीं। हाल में आया सर्वे का दूसरा हिस्सा ज्यादा ठोस है, लेकिन निष्कर्षों के नाम पर यहां भी घोलमट्ठा ही नजर आता है। आशावादी जार्गन से भरपूर इस दस्तावेज में कुछ भयानक बातें कही गई हैं। जैसे यह कि भारत का कृषि क्षेत्र तो तनाव से गुजर ही रहा है, साथ में टेलिकॉम और पावर सेक्टर से भी संकट के इशारे मिल रहे हैं। शेयर बाजार के बारे में बताया गया है कि अभी यह 2007 जैसी बेवजह ऊंचाई पर जा पहुंचा है। शेयरों की कीमतें कंपनियों की प्रति शेयर सालाना आय के 18 गुने के दीर्घकालिक औसत से काफी ऊंची चली गई हैं। मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही वित्त मंत्रालय भारतीय रिजर्व बैंक के साथ ब्याज दरें घटाने की लड़ाई में उतरा हुआ है। सर्वे की इस दूसरी किस्त में भी कहा गया है कि नीतिगत ब्याज दरें अपनी स्वाभाविक स्थिति की तुलना में 0.25 से 0.75 प्रतिशत ज्यादा हैं। यानी रिजर्व बैंक अगर इसी साल ब्याज दरें एक-दो बार और घटा दे तो शायद बात बन जाए लेकिन रिजर्व बैंक की स्थिति को अगर वित्त मंत्रालय के इस दस्तावेज की ही रोशनी में देखें तो कुछ हास्यास्पद निष्कर्ष निकलते हैं। देश के लगभग सारे ही बैंक डूबे हुए कर्जों से निपटने की कोशिश में लगे हैं। किसानों की कर्जमाफी का बोझ भी अंततः रिजर्व बैंक के ही खाते में जाना है। ऊपर से टेलिकॉम और पावर सेक्टर को दिए गए कर्जे फंसने की आशंका भी इकनॉमिक सर्वे ने जता दी है। जब मूलधन ही डूबने के इतने सारे खतरे रिजर्व बैंक के सामने हैं, तो भला किस भरोसे पर ब्याज दरें घटाने की उम्मीद उससे की जा रही है?

कालजयी पंजाबी साहित्य की बानगी

भाषा पंजाबी, हिंदी, उर्दू या अंग्रेजी कोई भी हो, एक विशेष कालखंड में रचा गया साहित्य कालातीत तभी कहलाये÷ा जब समाज उसे अपनाएगा। 'गोदान', 'कामायनी', 'चिदंबरा' से लेकर 'मुक्तिबोध', 'धूमिल' या 'पाश' तक की रचनाएं मुंह पर चढ़ती हैं तभी वे लोकोपयोगी कहलाती हैं। आज शिवकुमार बटालवी नहीं हैं, पर 'लूणा' आज ही नहीं, आने वाले समय में भी अपने रचनात्मक जादू के साथ सिर चढ़कर बोलेगी। संत राम उदासी, भाई वीर सिंह, धनी राम, गुरबख्श सिंह प्रीतलड़ी, नानक सिंह, देविन्दर सत्यार्थी, ईश्वर चंदर नंदा से लेकर बलवंत गार्गी, संत सिंह सेखों, अमृता प्रीतम, करतार सिंह दुग्गल, बलराज साहनी, सुजान सिंह से लेकर दलीप कौर टिवाणा या डॉ. हरचरण सिंह तक जितने और जैसे श्रेष्ठ कवि, गद्यकार, उपन्यासकार, लोकयान यात्री कहानीकार हैं, इनकी पहचान कलम की करामात से उभरकर आई पुस्तकों द्वारा ही हो रही है। गुरुवाणी, किस्सा काव्य, लोक साहित्य भी पंजाबी के संपन्न साहित्य से भरे पड़े हैं। कंठस्थ रचनाएं, याद रहने योग्य साहित्यांश अमरत्व को प्राप्त हो सकता है। ऐसा हुआ भी है। 'अज्ज आखां वारिस शाह नूं, किते कबरां विचों बोल, तू अज्ज किताबे इश्क दा कोई अगला वरका खोल। इक्क रोई सी धी पंजाब दी, उस हंस हंस मारे वैण, अज्ज लक्खां धीआं रोंदीआं, तैनूं वारिस शाह नूं कहिण।' अमृता प्रीतम ने भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार पाया या साहित्य अकादमी द्वारा अलंकृत हुई, यह एक उपलब्धि है, मगर यह लोकप्रियता जो अमृता के हिस्से इनके ऐसे काव्यांश से आ पाई, कवयित्री, कहानीकार, उपन्यासकार और संपादक अमृता प्रीतम को कालजयी घोषित कर रही है। उपन्यास 'पिंजर' हो या डॉ. देव, रसीदी टिकट आत्मकथा हो या फिर साहिर लुध्यानवी, इमरोज के साथ उनके समर्पण, प्यार की दास्तान, 'आखां वारिस शाह नूं' यहां सब पर सवार होकर साहित्येतिहास में अमृता प्रीतम उभरती है। गीत और कविता में एक साथ संपन्न हस्ताक्षर शिवकुमार बटालवी के चित्रों की प्रदर्शनी पंजाब कला भवन में पुकार-पुकार कर बटालवी के चाहने वालों को इसलिए ही अपनी ओर खींचती रही कि शिव के काव्यात्मक गुरुत्वाकर्षण से उसके श्रोता आज भी सराबोर हैं। 'इक्क छाती मेरे हाढ़ तपेंदा/ इक्क तपेंदा जेठ/ अग्ग टुरी परदेस नी सहियो, अग्ग टुरी परदेस।' अथवा 'मैं पूरण दी मां पूरण से हाण दी, लोका वे मैं की लगां सलवाण दी।' पूर्ण भगत की कथा को प्रेम में रंगते हुए 'लूणा' सरीखे शाहकार की रचना कर पाना, शिव बटालवी के हिस्से ही आया। 'इक्क कुड़ी जिहदा नां मुहब्बत, गुम है, गुम है, गुम है' से लेकर 'अज्ज दिन चढ़िया तेरे रंग वरगगा, तेरी चुम्मण पिछली संग वरगा' तक शिव के गीतों में 'असीं तां जोवन रुत्ते मरना' या फिर 'मैं इक्क शिकरा यार बनाया' सरीखे शिव के गीतों में तड़प, वियोग, उदासी, लय और मर्मांतक पीड़ा, यों ही दिखाई नहीं देती। बटाला से चंडीगढ़, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सेक्टर-17 या लेखक कार्नर सेक्टर-22 में भाग सिंह व अन्य दोस्तों के साथ सुरमई शाम की सुलहें मारता, गीतकार शिव इतना लोकप्रिय कि ऐसी शोहरत किसी अन्य पंजाबी कवि के हिस्से फिर से आज तक नहीं आ पाई। आटे दीआं चिड़ियां, मैनूं विदा करो, पीड़ां दा परागा, लाजवंती, मैं ते मैं से शुरू करें तो 'लूणा' तक कालजयी हो रही रचना में शिव मुखर है। चंडीगढ़ से लंदन, वापसी चंडीगढ़ से अपने गांव घर लौटा शिव पंजाबी शायरी का हरमन प्यारा शायर ही नहीं, कालजयी ऐसा हस्ताक्षर है जो अपने बिम्बों, प्रतीकों, उपमानों के आधार पर भुलाया नहीं जाएगा। लोकप्रियता को पंजाबी में हथियाने वालों में सोहन सिंह सीतल, संतोख सिंह धीर, गुरदयाल सिंह, इंदरजीत हसनपुरी, शमशेर संधु, सुरजीत पातर, विजय विवेक, जसवंत सिंह कंवल, प्रभजोत कौर जैसे दर्जनों हस्ताक्षर हैं मगर कालजयी कृति को सामने रखें तो 'बोल पंजाबण दे' (तीन खंड, 1400 पृष्ठ) वाली अमेरिका में प्रवासी लेखिका का जीवन व्यतीत कर रही कथाकार एन. कौर हैं। पूरा नाम नच्छत्तर कौर, धर्मपत्नी डॉ. जगजीत बराड़, 'इक्क कुड़ी चुप्प सी' एन. कौर का श्रेष्ठ कहानी संग्रह जिस पर चर्चा इधर इसलिए अधिक नहीं हुई कि यहां तो मुंह देखकर टीके निकलते रहे हैं। 'आवाज, आवाज है' जैसी प्रतिनिधि कहानी, 'सुकरात' सरीखी चिंतनशील कृति होने पर भी एन. कौर को हम 'बोल पंजाबण दे' के वास्ते इसलिए कालजयी कृतियों में शुमार करते हैं कि इन्होंने 'पंजाबिन' को परिभाषित तो किया ही, साथ ही पंजाबिन के हर आयु वर्ग के रूपों को लोकगीतों के आइने में संजोकर पंजाबी लोकगीत के रिक्तता को उजागर किया है। 'बोल पंजाबण दे' इसके तीनों खंडों में जिसका प्रकाशन पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के पब्लिकेशन ब्यूरो ने किया है। एन. कौर की यही कृति 'बोल पंजाबण दे' क्लासिक की श्रेणी में यों भी है कि जीवनभर की साधना को एन. कौर ने इसमें खपाया है। अपनी सूक्ष्म व संवेदनशील कथा-रचना की तरह 'बोल पंजाबण दे' का आकर्षण देहाती शहराती पंजाबी समाज में बराबर छाया हुआ है। केंद्रीय साहित्य अकादमी की दो महत्वपूर्ण कृतियां संपादित रूप में मुझे बांध रही हैं। एक सौ साल की पंजाबी कहानी और एक सदी की ही पंजाबी कविता। सतिंदर सिंह नूर ने 'बीहवीं सदी दा पंजाबी कवि' प्रस्तुत किया तो रघुबीर सिंह के संपादन में 'बीहवीं सदी दी पंजाबी कहाणी' 896 पृष्ठों में तैयार की है। चरन सिंह शहीद, हीरा सिंह दर्द से शुरू करके सर्वमीत, अजमेर संधु तक एक सौ पंजाबी कहानीकारों की पूरी सौ कहानियों का यह संकलन ध्यान मांगता है। क्रमशः पंजाबी कथाकारों की चार पीढ़ियां यहां उपस्थित हैं। सतिंदर सिंह नूर पंजाबी के आलोचक, दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और राष्ट्रीय साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष भी रहे। पंजाबी की एक सौ साल की कविता बीसवीं सदी में से चुनकर चार सौ कवियों के रूप में उन्होंने संकलन तैयार किया, जो अब हिंदी में अनूदित, साहित्य अकादमी द्वारा ही प्रकाशित उपलब्ध है। गीत, ग़ज़ल या कविता के रूप में चयनित इन कविताओं में चमक, आस्था, स्थायित्व है। भाई वीर सिंह, प्रो. पूर्ण सिंह से लेकर राजविन्दर, काना सिंह जैसे 205 रचनाकारों की यहां संकलित लगभग सभी कविताओं में पंजाबी कविता का 'पन' कायम है। 'कालजयी' रचना में पाठक, आलोचक, संपादक ही नहीं, कवि, रचनाकार भी बोलता है।

बच्चों का जाना

गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में ऑक्सीजन की कमी से 36 घंटे के अंदर हुई 30 बच्चों की मौत ने हमारे सरकारी तंत्र की सड़न को एक झटके में उजागर कर दिया है। इस कांड पर लीपापोती के लिए जो कवायदें चल रही हैं, वे और भी बदतर हैं। एक तरफ कहा जा रहा है कि ऑक्सीजन की कमी के चलते कोई मौत नहीं हुई, दूसरी तरफ यूपी सरकार ऑक्सीजन की सप्लाई रोकने वाली कंपनी के अधिकारियों की गिरफ्तारी में लगी है। हालांकि उपलब्ध दस्तावेज बताते हैं कि कंपनी के बकाये की समस्या पुरानी है। अस्पताल पर उसके 68 लाख से अधिक रुपये बकाया थे, जबकि समझौते के मुताबिक यह राशि 10 लाख रुपये से ज्यादा कभी नहीं होनी चाहिए थी। न केवल कंपनी की तरफ से लगातार तगादा होता रहा था बल्कि अस्पताल प्रशासन संबंधित विभागों के अधिकारियों को इस बारे में लगातार सूचित भी करता आ रहा था। फिर भी ऊपर से पैसा नहीं आया। दो दिन पहले ही मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी इस अस्पताल के दौरे पर आए थे। बच्चों की मौतें उससे पहले शुरू हो गई थीं। दौरे के दिन भी अस्पताल में 9 बच्चे मरे थे लेकिन मुख्यमंत्री आए और दौरा करके चले गए, बगैर यह जाने कि अस्पताल कैसी बदइंतजामी का शिकार है। ऐसे दौरों का आखिर मतलब क्या है? मुख्यमंत्री वहां क्या देखने आए थे? बहरहाल, मामला केवल इस एक अस्पताल का नहीं है, न ही उत्तर प्रदेश में यह केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र तक सीमित है। सरकारी दायरे में आने वाले सभी क्षेत्रों में कर्मचारियों के वेतन के अलावा लगभग सारे ही खर्चों में भारी कतरब्योंत की जा रही है और सरकारें उनकी दुर्दशा की साफ अनदेखी कर रही हैं। अफसरों का काम नेताओं की चमचागिरी से चल जाता है, जबकि नेताओं के लिए सरकार चलाने का मतलब ही भड़काऊ राजनीति करना है। एक पार्टी मनुवाद विरोध का ढोल पीटेगी, दूसरी गोरक्षा और लव जिहाद पर गदर काटेगी, जबकि तीसरी सेक्युलरिज्म की रक्षा में प्राण निछावर कर देने की बात करेगी। स्कूलों में ब्लैकबोर्ड पर लिखने के लिए चॉक नहीं है, अस्पतालों में ऐम्बुलेंस और थानों में गश्ती गाड़ियां तेल के बिना खड़ी-खड़ी जंग खा रही हैं, ऐसी छोटी-मोटी बातों की चिंता भला कौन करे? जहां जो कुछ भी चल रहा है, भगवान भरोसे चल रहा है। जहां नहीं चल रहा, वहां तब तक सब कुछ ठीक माना जाता है, जब तक एक साथ हुई बहुत सारी मौतों की खबर लेने के लिए टीवी का कैमरा न पहुंच जाए। गोरखपुर में अबोध बच्चों के इस सरकारी हत्याकांड पर की जाने वाली लीपापोती अगर कामयाब हो गई तो बहुत अच्छा, वरना कुछ छोटी मछलियों को उल्टा लटकाकर सरकार इस इत्मीनान में आ सकती है कि उसके बाकी कृत्यों पर कहीं कोई चर्चा नहीं होने वाली।

जीवन की गहनता बोध के गहने

वेद-विज्ञान, धर्म-अध्यात्म, संस्कृति, साहित्य जैसे जीवंत विषयों में साधिकार कलम चलाकर और विपुल साहित्य रचकर गुलाब कोठारी ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उनका पहला परिचय यह है कि वे पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं। ग्यारह खंडों में प्रकाशित चिंतन साहित्य 'मानस' व 'कृष्ण तत्व की वैज्ञानिकता' जैसी उनकी अनेक रचनाएं खासी चर्चित रही हैं। इस बार उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर पुस्तक लिखी है जो हमारे जीवन से गहरे तक जुड़ा है, मगर इस दिशा में गंभीर प्रयास ही नहीं हुए। समीक्ष्य कृति 'गहने ही क्यों पहने?' मनुष्य के नैसर्गिक सौंदर्यबोध की तार्किकता व गहनता को सहज-सरल शब्दों में परिभाषित करती है। पुस्तक बताती है कि जैसे प्रकृति सृष्टि का शृंगार करती है, वैसे ही आभूषण मनुष्य का। डॉ. कोठारी की पुस्तक रेखांकित करती है कि गहने महज हमारी सजने-संवरने की नैसर्गिक प्रवृत्ति के ही परिचायक ही नहीं हैं वरन इसका चिकित्सकीय महत्व भी है, जो तन-मन को उगासित रखने के साथ ही रोगमुक्ति का जरिया भी है। जीवन की चौसठ कलाओं में शुमार गहने से कालांतर समृद्धि और ज्योतिष के नये आयाम जुड़ गये। रत्न भाग्योदय के प्रतीक भी माने जाने लगे। यही वजह है कि आयुर्वेद व ज्योतिष के प्रसार के साथ गहनों की गहनता में विस्तार हुआ। बदलते वक्त के साथ गहनों के रंग-रूप में बदलाव आया है मगर मकसद स्त्री-पुरुष को अलंकृत करना ही था। उनके सौंदर्यबोध को विस्तार देना ही था। यही वजह है कि हर युग में गहनों का सम्मोहन कम नहीं हुआ। कभी सौंदर्य संवर्धन हेतु तो कभी आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा का पर्याय मान लिया गया। जनजीवन के मोहक व आकर्षक चित्रों के साथ डॉ. कोठारी ने धरती पर गहनों की शुरुआत, प्रागेतिहासिक काल से आधुनिक युग तक गहनों के विकास-विस्तार का तथ्यपूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया है। भारतीय वांड्मय में आभूषणों का विस्तृत उल्लेख है। धातुओं का संवर्धन, रत्नों की खोज और उन्हें मनोभावों के अनुरूप ढालने के इतिहास का तार्किक विवेचन लेखक ने किया है। समीक्ष्य कृति में आभूषणों का अर्थ, परिभाषा, इतिहास, रत्न संसार, सप्त धातु, रंग, आभूषण चिकित्सा, ग्रह और रत्न, आभूषणों से जुड़े विभिन्न सर्वेक्षणों, आभूषणों से जुड़ी कहावतें, मुहावरे व लोकगीत तथा आधुनिक गहने शीर्षक खंडों को पुस्तक में समेटा है।

अनुवाद में मूल जैसा पढ़ने का सुख

विदेशी लेखकों, कवियों और अन्य विद्वानों के साहित्य का हिंदी में अनुवाद बहुत कम हुआ है। किसी जमाने में विदेशी साहित्यकारों के सारिका, दिनमान, और रविवार में कई विशेष अंक आये थे जो अब तो बहुत दुर्लभ हैं। मनुष्य के अस्तित्व और उसके एकाकी जीवन के साहित्यिक मसीहा फ्रेंज काफ्का की जीवनी और उसके कथा साहित्य पर हिंदी अनुवाद बहुत मिलते हैं। उसके व्यावसायिक प्रकाशन भी हुए हैं और उससे अनुवादकों को साहित्यिक प्रसिद्धि भी मिली है। एक लेबनानी अमेरिकी कलाकार, कवि तथा न्यूयॉर्क पेन लीग के लेखक थे-जिब्रान। उन्हें अपने चिंतन के कारण समकालीन पादरियों और अधिकारी वर्ग का कोपभाजन होना पड़ा और जाति से बहिष्कृत करके देश निकाला तक दे दिया गया था। आधुनिक अरबी साहित्य में जिब्रान खलील 'जिब्रान' के नाम से प्रसिद्ध हैं, किंतु अंग्रेजी में वह अपना नाम खलील ज्ब्रान लिखते थे और इसी नाम से वे अधिक प्रसिद्ध भी हुए। राजस्थान के जाने माने साहित्यकर डॉ. सांवर सिंह यादव का जिब्रान के 'द मैडमेन' का हिंदी अनुवाद साहित्य जगत में आया है। जिब्रान की 'द मैडमैन' पुस्तक की 35 रचनाओं का अंग्रेजी भाषा से हिंदी में अनुवाद बहुत ही सरलता से किया है जिसे पढ़ते हुए रोचकता बनी रहती है। हिंदी की बोलचाल की भाषा का ध्यान रखा गया है। अंग्रेजी शब्दों के अनुवाद में अक्सर अनुवादक बहुत क्लिष्ट शब्दों का चयन करते हैं। इस पुस्तक का अंग्रेजी नाम है : द मैडमैन यानी एक पागल आदमी, मगर डॉ. यादव ने सिर्फ 'पागल' लिखा जो स्वयं एक पुरुष पागल को इंगित करता है। इस अनुवाद में जिब्रान की रचनाओं के शीर्षक बहुत छोटे और स्पष्ट हैं। जैसे 'द स्लीप वाकर्स' का अनुवाद है : स्वप्नचर, 'द गुडगॉड, एण्ड द एविल गॉड' का अनुवाद है : शुभ और अशुभ के दूत। इस अनुवादक ने जिब्रान की रचनाओं के मर्म और बोधकथा का बहुत ही ईमानदारी और लग्नता के साथ ध्यान रखा है। पाठक को जिब्रान की मूल अंग्रेजी किताब का रेफरेंस लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिब्रान का दर्शन और अध्यात्म बोध बहुत पैना और सटीक है जिसका अनुवाद में ध्यान रखा गया है। वैसे डॉ. यादव ने अंत के पन्नों पर अध्यायानुसार स्पष्टीकरण देकर पाठक को जिब्रान के ज्ञानबोध को अधिक सरल बनाया है।

राशिफल

मेष: खर्च में संयम रखने की सलाह गणेशजी आपको देते है, क्योंकि आज धन खर्च का विशेष योग है। धन संबंधी एवं लेन-देन संबंधी सभी कार्यों में सावधानी रखने की जरूरत है। किसी के साथ विवाद न हो, इसका ध्यान रखें।

वृषभ: आज का दिन गणेशजी के हिसाब से शुभ फलदायी है। आपकी रचनात्मक ओर कलात्मक शक्तियों में वृद्धि होगी। मानसिक रूप से आज आप वैचारिक स्थिरता की अनुभूति करोगे, जिसके परिणामस्वरुप आप लग्न के साथ काम कर पाएंगे। अपना आर्थिक उत्तदायित्व अच्छी तरह से निभा पाएंगे। आर्थिक योजना बना सकेंगे।

मिथुन: गणेशजी चेतावनी देते हुए कहते हैं कि आज का दिन कष्टदायी होने से हर कार्य में सावधानी बरतें। परिवारजनों एवं संतानों से अनबन हो सकती है। उग्रता एवं आवेग को अंकुश में रखें ताकि बात बिगड़े नहीं।

कर्क : आज का दिन आपके लिए बहुत लाभकारी है। आपकी आय में वृद्धि होगी। किसी अन्य तरीके से भी आर्थिक लाभ होगा। मित्रों के साथ भेंट होगी। स्त्री मित्रों से विशेष लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। संतान और जीवनसाथी से सुख मिलेगा। विवाह के योग है।

सिंह : आपके व्यवसाय हेतु आज का दिन बहुत अच्छा एवं श्रेष्ठ है, ऐसा गणेशजी कहते है। आज हर काम सफलतापूर्वक संपन्न होगा। उच्च पदाधिकारियों की आप पर कृपादृष्टि रहेगी। आज आपका प्रभुत्व चरम सीमा पर रहेगा। पिता की ओर से लाभ के संकेत है।

कन्या : आज आपका दिन अच्छा रहेगा। सगे-संबंधी के साथ प्रवास का आयोजन हो सकता है। स्त्री मित्रों से लाभ होना संभव है। धार्मिक कार्य तथा धार्मिक यात्रा में व्यस्त रहेंगे। विदेश में रहनेवाले स्नेहीजनों के समाचार से आनंद होगा।

तुला : आज आपको नए कार्य की शुरुआत करने की सलाह गणेशजी देते है। भाषा और व्यवहार पर संयम रखना आपके हित में होगा। द्वेष से दूर रहिए तथा शत्रुओं से सावधान । तबियत का ध्यान रखें।

वृश्चिक : आज आपका दिन कुछ भिन्न तरीके से बीतेगा। स्वंय के लिए आप समय निकाल पाएंगे। मित्रों के साथ घूमना-फिरना, मौज-मस्ती, मनोरंजन, छोटे पर्यटन तथा भोजन और वस्त्र-परिधान इत्यादि से आप बहुत आनंदित रहेंगे।

धनु : गणेशजी कहते है कि आज आपके लिए आर्थिक लाभ का दिन है। घर में शांति और आनंद का वातावरण रहेगा, जो कि आपके मन को प्रसन्न रखेगा। नौकरी करनेवाले लोगों को नौकरी से लाभ और सहकर्मीयों से सहयोग मिलेगा। कार्यसिद्धि तथा यश मिलेगा। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मकर : आज आपका मन चिंताग्रस्त और दुविधायुक्त रहेगा, ऐसा गणेशजी कहते हैं। ऐसी मनोदशा में आप किसी भी कार्य में दृढ़ निश्चय नहीं रह पाएंगें। आज के दिन कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य न करें क्योंकि आज भाग्य साथ नहीं देगा।

कुंभ : आज आपके स्वभाव में प्रेम छलकेगा, ऐसा गणेशजी कहते हैं। इस कारण मानसिक रूप से व्यग्रता का अनुभव होगा। धनोपार्जन सम्बंधित योजना बन सकती है। स्त्रियों के आभूषण, वस्त्र, सौंदर्य-प्रसाधन के पीछे धन खर्च होगा। माता से लाभ होने की संभावना है। जमीन, मकान एवं वाहन आदि के सौदों में ध्यान रखना अति आवश्यक है। विद्योपार्जन करनेवालों को विद्याप्राप्ति में सफलता मिलेगी। स्वभाव में हठीलापन टालिएगा।

मीन : गणेशजी कहते है कि आज आपका दिन शुभ फलदायी होगा, आपकी सृजनात्मक और कलात्मक शक्तियों में वृद्धि होगी। वैचारिक स्थिरता के कारण आपके कार्य आज अच्छी तरह से संपन्न कर पाएंगे। महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आज का दिन शुभ है। जीवनसाथी के साथ समय अच्छी तरह से बितेगा।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. याद, स्मरण 3. अग्नि, आग, पवित्र करने वाला 6. गौ जाति का नर 8. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 10. मुस्कुराहट, तबस्सुम 11. खारा, नमक के स्वाद जैसा 14. मुख्यभाग, निचोड़ 16. पिंडली व एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हड्डी, गुल्फ 18. अद्भूत, विचित्र 21. सम्राट, बादशाह, नरेश 22. कृति, निर्माण करना, बनाना 23. बड़ी थाली 24. समूह, दल 26. एहसानमंद, कृतज्ञ 27. ध्वनि, सदा 28. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर।

ऊपर से नीचे
2. अपमान, अनादर, अवज्ञा 3. जल, नीर, अम्बु 4. वाणी, वादा, कथन 4. कर्म शब्द का अपभ्रंश, भाग्य 7. लकड़ी का घूमने वाला एक गोल खिलौना, बिजली का बल्ब 9. लोग, प्रजा 10. यात्री, राही, पथिक 12. कीड़ा 13. चोचला, अदा 15. दंड 17. अवैध, अनुचित 18. जो आधिकारिक न हो, जो अधिकार प्राप्त न हो 19. जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, सत्यपरक, वाजिब 20. ताकत, शक्ति 24. प्रश्न, समस्या 25. घटना, घटना का वर्णन 26. एक प्रसिद्ध पक्षी जो रात में विचरण करता है, लक्ष्मीजी की सवारी 27. पानी, चमक।

पिछले अंक का हल

टे	ढ़ा	मे	ढ़ा		म	हा	र	त
क		ह					ज	न
	जा	न	की		क	म	नी	य
		त	म	क	ना			
म			त	ह	त		दा	ब
सी	मा			ला		स	न	द
हा	थ	म	ल	ना		वा		च
		द			घा	ल	मे	ल
	ब	द	ह	वा	स			न

सू-दोकू

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.43 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6